विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित

महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

द्वारा

२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध
चुनौतियाँ एवं विकल्प

विषय पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

१४-१५ फरवरी, २०१५

आमंत्रण...

सेवा में,

_____

_____

_____

प्रेषक :
प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य
महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज
जंगल धूसड़, गोरखपुर 273014
email-mpmpg5@gmail.com
web : mpm.edu.in
मो.: 09794299451

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित

२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध

चुनौतियाँ एवं विकल्प

विषय पर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

१४-१५ फरवरी, २०१५

: आयोजक :

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

तथा

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर-२७३०१४, उत्तर प्रदेश

0551-6827552, 2105416, 09794299451

email-mpmpg5@gmail.com, web : mpm.edu.in

चुनौतियाँ एवं विकल्प

पर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

१४-१५ फरवरी, २०१५

आमंत्रण

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

गोरक्षपीठाधीश्वर

संरक्षक

योगी आदित्यनाथ जी महाराज

महाविद्यालय प्रबन्धक, सदर सांसद, गोरखपुर

संयोजक

डॉ. प्रदीप राव

प्राचार्य

सह संयोजक

डॉ. शुभांशु शेखर सिंह

प्रवक्ता

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मोबाइल-९४५०२८८५९२

ईमेल-drsss1982@gmail.com

संगोष्ठी सचिव

डॉ.शशिकान्त सिंह

प्रवक्ता

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मोबाइल-९४५२६९०१५७

ईमेल-sksgkp11@gmail.com

आयोजन स्थल : महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं विकल्प

नेपाल भारत का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से निकटतम अभिन्न पड़ोसी राष्ट्र है। प्राचीन काल से इन दोनों देशों की शिराओं में सप्राणता का एक ही रक्त-प्रवाह बहता रहा है। एक ही सांस्कृतिक और आदर्श दोनों के जीवन की प्रगति मार्ग को दिशा देते रहे हैं। इसकी प्रामाणिकता के लिए एक ही तथ्य पर्याप्त है कि नेपाल के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में 'संकल्प' का मंत्र वही है जो भारत में प्रचलित है। नेपाल के पुरोहित निःसंकोच 'संकल्प-मंत्र' में अपने देश के लिए 'भारत खण्डे' का प्रयोग करते हैं।

भारत-नेपाल अनादिकाल से ही सांस्कृतिक एवं भूगोल की धाराओं के अटूट साझीदार रहे हैं। हिमालय इन दोनों के लिए आत्म साधना का स्थान रहा है। हिमालय से वे नदियाँ निकलती हैं, जिनसे दोनों देशों की भूमि शस्य-श्यामला बनती है अर्थात् जितनी आवश्यकता प्रगति एवं विकास के लिए नेपाल को भारत की रही है, उतनी ही आवश्यकता सीमा सुरक्षा की दृष्टि से भारत को नेपाल की है।

भारत व नेपाल के सम्बन्ध प्रायः सौहार्द पूर्ण रहे हैं तथा इसे बनाये रखने के लिए दोनों देशों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सन्धियाँ की गयी, साथ ही साथ दोनों देशों के राजनयिकों द्वारा समय-समय पर यात्राएँ की जाती रही हैं। भारत-नेपाल के प्रगति एवं विकास कार्यों में योजनाबद्ध रूप से आर्थिक सहयोग करता है। कतिपय राजनीतिक कारणों से नेपाल, भारत के प्रति सशंकित रहता है। भारत में नेपाल के स्वभाव को लेकर भावनात्मक और राजनीतिक चिन्ता दृष्टिगत होती है। यह विडम्बना ही है कि भारत-नेपाल सम्बन्धों में भारत की ओर से नेपाल के लोगों की कुशलता और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायित्व का भाव दृष्टिगत रहता है जबकि नेपाल में राजनीतिक, रूपान्तरण के प्रत्येक अगले पड़ाव के साथ संशय और दुराव की स्थितियाँ सृजित होती हैं।

वर्तमान में नेपाल एक उभरता हुआ लोकतंत्र है। संविधान सभा के निर्वाचन के साथ ही नेपाल ने शांति एवं लोकतंत्र की राह पर अपने कदम मजबूती से आगे बढ़ाये हैं। इसने राजतंत्र को समाप्त कर देश को संघीय गणराज्य घोषित किया गया है। १९९० का संविधान जो २००७ के मध्य तक लागू रहा, लोकतंत्र में समानता की बात करता था, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं था। यही कारण रहा कि नेपाल दस वर्षों से अधिक समय तक आन्तरिक अशांति से जूझता रहा। नेपाल विश्व के सर्वाधिक गरीब देशों में (मानव विकास सूचकांक के अनुसार), १५७वें स्थान पर है। रोजगार की तलाश में भारत की ओर पलायन करने वाले व्यक्तियों की संख्या लाखों में है। प्रतिदिन लगभग २०० नेपाली युवक बतौर मजदूर खाड़ी देशों में पलायन कर रहे हैं। नेपाल में पर्यटन उद्योग वहाँ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो भारी मन्दी की चपेट में है। देश में हड़ताल व बन्द के साथ ही जातीय समूहों के बीच मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गयी है, जो चिन्ताजनक है। नेपाल संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना व राजतंत्र की समाप्ति के इतने समय बाद भी राजनैतिक स्थायित्व से वंचित है। राजनीतिक अस्थिरता का सीधा प्रभाव संविधान के निर्माण एवं नेपाल की प्रगति व विकास की योजनाओं पर पड़ रहा है। अभी जो राजनीतिक वातावरण है, उसका असर सरकार के संवैधानिक अंगों, नेपाली सेना, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और शांति प्रक्रिया की कड़ी में स्थापित व्यापक शांति समझौते पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। अभी जो संक्रमणकालीन स्थिति है उसमें एक के बाद एक औद्योगिक प्रतिष्ठान बन्द होते जा रहे हैं। राजनीतिक सहमति के अभाव में सरकार पूर्ण रूप से बजट नहीं ला पा रही है। संवैधानिक अंगों के प्रमुख पदों पर जो खाली स्थान है, उन पर नियुक्तियाँ नहीं हो पा रही हैं। निश्चित रूप से बदलते राजनीतिक परिदृश्य का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव भारत-नेपाल सम्बन्धों पर भी पड़ता है। वैश्विक स्तर पर आये परिवर्तन तथा भारत की पड़ोसी देशों के प्रति अपनी नीतियों के कारण दोनों देशों के बीच मधुर सम्बन्धों की व्यापक सम्भावना है। शेष भविष्य के घटनाचक्र पर निर्भर करता है। लेकिन कुछ ऐसे बिन्दु है, जो भारत नेपाल सम्बन्धों में समय-समय पर तनाव उत्पन्न करते रहे हैं।

इन प्रश्नों और मुद्दों पर व्यापक विमर्श और समाधान के विकल्पों तक पहुँचने के लिए इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है, जिसमें प्रमुख विचार बिन्दु निम्नवत होंगे-

१. भारत-नेपाल सम्बन्ध : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
२. भारत-नेपाल सम्बन्धों के निर्धारक कारक।
३. नेपाली-अर्थव्यवस्था में भारत की भूमिका।
४. नेपाल की आन्तरिक स्थिरता और राजशाही।
५. नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था की भूमिका।
६. भारत-नेपाल सम्बन्धों पर चीन का प्रभाव।
७. नेपाली अर्थव्यवस्था में चीन की भूमिका।
८. नेपाल में आन्तरिक अशांति के कारक।
९. माओवादी आन्दोलन का नेपाल के राजनैतिक एवं सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव।
१०. भारत व नेपाल के माओवादियों का अन्तरसम्बन्ध।
११. नेपाल सेना : चुनौतियाँ और सन्नद्धताएं।
१२. नेपाल की वर्तमान चुनौतियाँ और भारत के लिए नीतिगत विकल्प।
१३. नेपाल-चीन सम्बन्ध और भारत।
१४. भारत की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा और नेपाल।
१५. नेपाल से अवैध आव्रजन की समस्या और भारतीय सुरक्षा।

शोधपत्र - संगोष्ठी में प्रस्तुति हेतु शोध प्रपत्र में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त प्रणाली एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। संगोष्ठी के सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों पर मौलिक एवं अप्रकाशित शोध पत्र ही स्वीकृत किये जायेंगे। इसके लिए विभिन्न विषयों के शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध-पत्र आमंत्रित हैं। संकल्पनात्मक, सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक शोध प्रपत्र अपेक्षित है।

सन्दर्भ निम्नवत दें-

पुस्तक के लिए - लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या।

शोध-पत्रिका के लिए - लेखक का नाम, शोध शीर्षक, शोध पत्रिका का नाम, भाग, अंक, प्रकाशक, प्रकाश वर्ष, पृष्ठ संख्या।

पूर्ण शोधपत्र अधिकतम १५ दिसम्बर २०१४ तक संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी के पास अवश्य पहुँच जाने चाहिए। हिन्दी, संस्कृत तथा नेपाली भाषा के लिए Kurti dev 010 तथा अंग्रेजी के लिए Time New Roman के फान्ट पर टंकण कार्य होना चाहिए। पूर्ण तैयार शोधपत्र को mpmpg5@gmail.com पर ईमेल कर संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी को फोन करके सूचित अवश्य कर दें। किसी भी अन्य प्रकार की सूचना के लिए संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी तथा महाविद्यालय की वेबसाइट एवं ईमेल के माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भाषा - शोध प्रपत्र संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी/नेपाली भाषा में स्वीकृत होंगे।

पंजीयन - पंजीयन शुल्क ५०० रू. है। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में "प्राचार्य महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के नाम से गोरखपुर में देय अनुमन्य होगा।

यात्रा व्यय - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार प्रतिनिधियों को वास्तविक यात्रा व्यय देय होगा। यात्रा व्यय उन्हीं प्रतिनिधियों को प्राप्त होगा जो निर्धारित तिथि से पूर्व अपना पूर्ण शोध-पत्र जमा करते हुए पंजीकरण करा चुके होंगे एवं आयोजन समिति की संस्तुति प्राप्त हो चुकी होगी। गोरखपुर रेलवे स्टेशन-बस स्टेशन से महाविद्यालय आने की व्यवस्था आयोजन समिति की ओर से होगी। आटो रिक्शा रिजर्व कर १०० रू. में महाविद्यालय पहुँचा जा सकता है। धर्मशाला बाजार से १० रू. प्रति व्यक्ति किराये पर आटो हर समय उपलब्ध है।

आवास/भोजन व्यवस्था - आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। यदि कोई प्रतिनिधि किसी होटल अथवा विशेष व्यवस्था चाहता है तो उसे पूर्व में सूचित करना होगा।

महाविद्यालय एवं गोरखपुर - महाविद्यालय गोरखपुर महानगर की सीमा पर गोरखपुर रेलवे स्टेशन से १० किमी. दूरी पर स्थित है। गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित गुरू श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित है। भगवान बुद्ध के गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थ नगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग ९० किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर ५० किमी की दूरी पर स्थित है। समाज सुधारक एवं मध्ययुगीन संत कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से २० किमी० दूर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग १०० किमी० है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डू, गोरखपुर से ४०० किमी. की दूरी पर स्थित है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक किया जा सकता है। नगर क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल है, जिनमें गोरखनाथ मन्दिर, गीतावाटिका, गीताप्रेस, विष्णु मन्दिर, गोलघर मार्केट आदि प्रमुख हैं। फरवरी माह में गोरखपुर का मौसम प्रायः सुहावना एवं सामान्य रहता है, लेकिन रात्रि में हल्की ठण्ड रहती है। अतः गर्म कपड़े अपने साथ अवश्य रखें।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक
गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज
महाविद्यालय प्रबन्धक, सदर खंराद, गोरखपुर

संरक्षक
प्रो. अशोक कुमार
कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

अध्यक्ष
डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा
रक्षा एवं स्त्रातजिक विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संगोष्ठी सचिव
डॉ. शशिकान्त सिंह
प्रवक्ता, रक्षा एवं स्त्रातजिक विभाग

सदस्य
डॉ. विजय कुमार चौधरी
डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति
श्रीमती कविता मन्ध्यान
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार
श्रीप्रकाश प्रियदर्शी
डॉ. आरती सिंह
श्री सुबोध मिश्र
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
डॉ. सुनील कुमार मिश्र
श्रीमती शालिनी चौधरी
डॉ. अजय बहादुर सिंह

संयोजक
प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

सह संयोजक
डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह
प्रवक्ता, रक्षा एवं स्त्रातजिक विभाग
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र विभाग

परामर्श दात्री समिति

प्रो. यू.पी. सिंह
पूर्व कुलपति
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

प्रो. राम अचल सिंह
पूर्व कुलपति
राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

प्रो. सी. बी. सिंह
पूर्व अध्यक्ष
राजनीतिशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो. विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. सल्तन जी सिंह
कुलपति
हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल

प्रो. आर. पी. यादव
पूर्व कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. आर. एन. सिंह
पूर्व अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. हरी शरण
पूर्व अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. ए. पी. शुक्ला
अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गो.विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. शेखर अधिकारी
अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रो. कमल सिंगर
अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब

श्री अजीत कुमार
सामाजिक कार्यकर्ता, नई दिल्ली

डॉ. कृष्ण कुमार गौतम
काठमाण्डू, नेपाल

डॉ. काशीनाथ
बुद्ध टूरिज्म विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल

श्री दीपक अधिकारी
सामाजिक कार्यकर्ता, काठमाण्डू, नेपाल

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
Mob.: 09450288592, 09452690157, 08794299451
Web.: www.mpm.edu.in, Email:mpmpg5@gmail.com

२१वीं शताब्दी मे भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं विकल्प

नेपाल भारत का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से निकटतम अभिन्न पड़ोसी राष्ट्र है। प्राचीन काल से इन दोनों देशों की शिराओं में सम्पृक्तता का एक ही रक्त-प्रवाह बहता रहा है। एक ही सांस्कृतिक और आदर्श दोनों के जीवन की प्रगति मार्ग को दिशा देते रहे हैं। इसकी प्रामाणिकता के लिए एक ही तथ्य पर्याप्त है कि नेपाल के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में 'संकल्प' का मंत्र वही है जो भारत में प्रचलित है। नेपाल के पुरोहित निःसंकोच 'संकल्प-मंत्र' में अपने देश के लिए 'भारत खण्डे' का प्रयोग करते है।

भारत-नेपाल अनादिकाल से ही सांस्कृतिक एवं भूगोल की धाराओं के अटूट साझीदार रहे हैं। हिमालय इन दोनों के लिए आत्म साधना का स्थान रहा है। हिमालय से वे नदियाँ निकलती हैं, जिनसे दोनों देशों की भूमि शस्य-श्यामला बनती है अर्थात् जितनी आवश्यकता प्रगति एवं विकास के लिए नेपाल को भारत की रही है, उतनी ही आवश्यकता सीमा सुरक्षा की दृष्टि से भारत को नेपाल की है।

भारत व नेपाल के सम्बन्ध प्रायः सौहार्द्र पूर्ण रहे हैं तथा इसे बनाये रखने के लिए दोनों देशों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सन्धियाँ की गयी, साथ ही साथ दोनों देशों के राजनयिकों द्वारा समय-समय पर यात्राएँ की जाती रही हैं। भारत-नेपाल के प्रगति एवं विकास कार्यों में योजनाबद्ध रूप से आर्थिक सहयोग करता है। कतिपय राजनीतिक कारणों से नेपाल, भारत के प्रति संशकित रहता है। भारत में नेपाल के स्वभाव को लेकर भावनात्मक और राजनीतिक चिन्ता दृष्टिगत होती है। यह विडम्बना ही है कि भारत-नेपाल सम्बन्धों मे भारत की ओर से नेपाल के लोगों की कुशलता और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायित्व का भाव दृष्टिगत रहता है जबकि नेपाल मे राजनीतिक, रूपान्तरण के प्रत्येक अगले पड़ाव के साथ संशय और दुराव की स्थितियाँ सृजित होती है।

वर्तमान में नेपाल एक उभरता हुआ लोकतंत्र है। संविधान सभा के निर्वाचन के साथ ही नेपाल ने शांति एवं लोकतंत्र की राह पर अपने कदम मजबूती से आगे बढ़ाये है। इसने राजतंत्र को समाप्त कर देश को संघीय गणराज्य घोषित किया गया है। १९९० का संविधान जो २००७ के मध्य तक लागू रहा, लोकतंत्र में समानता की बात करता था, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं था। यही कारण रहा कि नेपाल दस वर्षों से अधिक समय तक आन्तरिक अशांति से जूझता रहा। नेपाल विश्व के सर्वाधिक गरीब देशों में (मानव विकास सूचकांक के अनुसार), १५७वें स्थान पर हैं। रोजगार की तलाश मे भारत की ओर पलायन करने वाले व्यक्तियों की संख्या लाखों में है। प्रतिदिन लगभग २०० नेपाली युवक बतौर मजदूर खाड़ी देशों मे पलायन कर रहे है। नेपाल मे पर्यटन उद्योग वहाँ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो भारी मन्दी की चपेट में है। देश में हड़ताल व बन्द के साथ ही जातीय समूहों के बीच मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गयी है, जो चिन्ताजनक है। नेपाल संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना व राजतंत्र की समाप्ति के इतने समय बाद भी राजनैतिक स्थायित्व से वंचित है। राजनीतिक अस्थिरता का सीधा प्रभाव संविधान के निर्माण एवं नेपाल की प्रगति व विकास की योजनाओं पर पड़ रहा

है। अभी जो राजनीतिक वातावरण है, उसका असर सरकार के संवैधानिक अंगों, नेपाली सेना, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और शांति प्रक्रिया की कड़ी में स्थापित व्यापक शांति समझौते पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। अभी जो संक्रमणकालीन स्थिति है उसमें एक के बाद एक औद्योगिक प्रतिष्ठान बन्द होते जा रहे हैं। राजनीतिक सहमति के अभाव में सरकार पूर्ण रूप से बजट नहीं ला पा रही है। संवैधानिक अंगों के प्रमुख पदों पर जो खाली स्थान है, उन पर नियुक्तियाँ नहीं हो पा रही हैं। निश्चित रूप से बदलते राजनीतिक परिदृश्य का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव भारत-नेपाल सम्बन्धों पर भी पड़ता है। वैश्विक स्तर पर आये परिवर्तन तथा भारत की पड़ोसी देशों के प्रति अपनी नीतियों के कारण दोनों देशों के बीच मधुर सम्बन्धों की व्यापक सम्भावना है। शेष भविष्य के घटनाचक्र पर निर्भर करता है। लेकिन कुछ ऐसे बिन्दु है, जो भारत नेपाल सम्बन्धों में समय-समय पर तनाव उत्पन्न करते रहे हैं।

इन प्रश्नों और मुद्दों पर व्यापक विमर्श और समाधान के विकल्पों तक पहुँचने के लिए इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है, जिसमें प्रमुख विचार बिन्दु निम्नवत होंगे-

१. भारत-नेपाल सम्बन्ध : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक यात्रा।
२. भारत-नेपाल सम्बन्धों के निर्धारक कारक।
३. नेपाली-अर्थव्यवस्था में भारत की भूमिका।
४. नेपाल की आन्तरिक स्थिरता और राजशाही।
५. नेपाल में लोकतांत्रिक व्यवस्था की भूमिका।
६. भारत-नेपाल सम्बन्धों पर चीन का प्रभाव।
७. नेपाली अर्थव्यवस्था में चीन की भूमिका।
८. नेपाल में आन्तरिक अशांति के कारक।
९. माओवादी आन्दोलन का नेपाल के राजनैतिक एवं सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव।
१०. भारत व नेपाल के माओवादियों का अन्तरसम्बन्ध।
११. नेपाल सेना : चुनौतियाँ और सम्भावनाएं।
१२. नेपाल की वर्तमान चुनौतियाँ और भारत के लिए नीतिगत विकल्प।
१३. नेपाल चीन सम्बन्ध और भारत।
१४. भारत की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा और नेपाल।
१५. नेपाल से अवैध आव्रजन की समस्या और भारतीय सुरक्षा।

शोधपत्र – संगोष्ठी में प्रस्तुति हेतु शोध प्रपत्र में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त प्रणाली एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। संगोष्ठी के सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों पर मौलिक एवं अप्रकाशित शोध पत्र ही स्वीकृत किये जायेंगे। इसके लिए विभिन्न विषयों के शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध-पत्र आमंत्रित हैं। संकल्पनात्मक, सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक शोध प्रपत्र अपेक्षित है।

सन्दर्भ निम्नवत दें-

पुस्तक के लिए – लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या।

शोध-पत्रिका के लिए – लेख का नाम, शोध शीर्षक, शोध पत्रिका का नाम, भाग, अंक,

प्रकाशक, प्रकाश वर्ष, पृष्ठ संख्या।

पूर्ण शोधपत्र अधिकतम १५ नवम्बर २०१४ तक संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी के पास अवश्य पहुँच जाने चाहिए। हिन्दी, संस्कृत तथा नेपाली भाषा के लिए Kurti dev 010 तथा अंग्रेजी के लिए Time New Roman के फान्ट पर टंकण कार्य होना चाहिए। पूर्ण तैयार शोधपत्र को mpmpg5@gmail.com पर ईमेल कर संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी को फोन करके सूचित अवश्य कर दें। किसी भी अन्य प्रकार की सूचना के लिए संयोजक/सहसंयोजक संगोष्ठी तथा महाविद्यालय की वेबसाइट एवं ईमेल के माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भाषा – शोध प्रपत्र संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी/नेपाली भाषा में स्वीकृत होंगे।

पंजीयन – पंजीयन शुल्क ५०० रू. है। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में "प्राचार्य महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के नाम से गोरखपुर में देय अनुमन्य होगा।

यात्रा व्यय – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार प्रतिनिधियों को वास्तविक यात्रा व्यय देय होगा। यात्रा व्यय उन्हीं प्रतिनिधियों को प्राप्त होगा जो निर्धारित तिथि से पूर्व अपना पंजीकरण करा चुके होंगे एवं आयोजन समिति की संस्तुति प्राप्त हो चुकी होगी। गोरखपुर रेलवे स्टेशन-बस स्टेशन से महाविद्यालय आने की व्यवस्था आयोजन समिति की ओर से होगी। आटो रिक्शा रिजर्व कर १०० रू. में महाविद्यालय पहुँचा जा सकता है। धर्मशाला बाजार से १० रू. प्रति व्यक्ति किराये पर आटो हर समय उपलब्ध है।

आवास/भोजन व्यवस्था – आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। यदि कोई प्रतिनिधि किसी होटल अथवा विशेष व्यवस्था चाहता है तो उसे पूर्व में सूचित करना होगा।

महाविद्यालय एवं गोरखपुर – महाविद्यालय गोरखपुर महानगर की सीमा पर गोरखपुर रेलवे स्टेशन से १० किमी. दूरी पर स्थित है। गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित गुरू श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित है। भगवान बुद्ध के गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थ नगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग ६० किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर ५० किमी की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन संत एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के पोषक संत कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से २० किमी० दूर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग १०० किमी० है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डू, गोरखपुर से ४०० किमी. की दूरी पर स्थित है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक किया जा सकता है। नगर क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल है, जिनमें गोरखनाथ मन्दिर, गीतावाटिका, गीताप्रेस, विष्णु मन्दिर, गोलघर मार्केट आदि प्रमुख हैं। फरवरी माह में गोरखपुर का मौसम प्रायः सुहावना एवं सामान्य रहता है, लेकिन रात्रि में हल्की ठण्ड रहती है। अतः गर्म कपड़े अपने साथ अवश्य रखें।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : १४-१५ फरवरी, २०१५

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग तथा नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र, महाराणा प्रताप पी.जी. कलोज, जंगल धूसड़, गोरखपुर तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी १४ एवं १५ फरवरी, २०१५ को सम्पन्न हुई। जिसका विषय '२१वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ और विकल्प' रहा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अतिथि

उद्घाटन समारोह

१४ फरवरी, २०१५ को उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गोरक्षपीठाधीश्वर, सांसद, गोरखपुर परमपूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि नेपाल के पूर्व गृहमंत्री श्री खूम बहादुर खड़का, विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री डॉ. देवेन्द्र राज कण्डेल तथा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए.पी. शुक्ल, मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल थे। उद्घाटन समारोह के अवसर पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के पूर्व अध्यक्ष प्रो. शिवाजी सिंह, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के पूर्व कुलपति प्रो. यू. पी. सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रो. टी.पी. वर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने संगोष्ठी के विषय वस्तु पर प्रस्तावकी रखी तथा आयोजन समिति के अध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन

अतिथि को सम्मानित करते पूज्य महाराज जी

विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा ने अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया। उद्घाटन समारोह का संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया।

पुस्तक विमोचन एवं सारस्वत सम्मान

पुस्तक विमोचन

राष्ट्रीय संगोष्ठी में १५ दिसम्बर तक प्राप्त हो चुके स्तरीय एवं स्वीकृत शोध पत्रों को शोध-पत्रिका 'मानविकी' के विशेषांक स्वरूप में प्रकाशित किया गया जिसका विमोचन राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्पन्न हुआ। प्रो. महेश कुमार शरण की पुस्तक 'पर्यटकों का देश थाइलैण्ड' तथा डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक द्वारा लिखित पुस्तक 'हिन्दू सम्राट हेमू विक्रमादित्य' का विमोचन अतिथियों द्वारा हुआ। इतिहास के क्षेत्र विशेष में योगदान के लिए 'डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक' तथा संस्कृत साहित्य में विशेष योगदान के लिए 'डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय साहित्येन्दु' को 'सारस्वत सम्मान' प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो. यू.पी. सिंह, प्रो. ए.पी. शुक्ल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर नेपाल से आए एक दर्जन प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने और द्विपक्षीय वार्ता से राष्ट्रीय संगोष्ठी, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर ली। इस संगोष्ठी में प्रो. टी.पी. वर्मा, श्री बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ. के.एन. पाण्डेय, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ. प्रदीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डा. विनोद कुमार सिंह, डा. श्रीनिवास मणि त्रिपाठी, डॉ. शेर बहादुर सिंह, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विषय प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी में शोध पत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी में महाराष्ट्र, बिहार, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, नेपाल के ६८ शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध-पत्र स्वीकृत हुए एवं महत्वपूर्ण १५ शोध पत्र पढे गए। इनमें से ३३ शोध-पत्र 'मानविकी' में विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर दिया गया तथा शेष शोध-पत्रों को शोध-पत्रिका 'शोध-संचयन' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है।

समापन समारोह

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में अतिथि

१५ फरवरी, २०१५ को अपराह्न राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के पूर्व कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने की। समारोह के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बाल मुकुन्द पाण्डेय तथा विशिष्ट अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के राजनीति शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार सिंह रहे। समापन समारोह में आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा ने संगोष्ठी की कार्यवाही प्रस्तुत की तथा महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़ के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

संगोष्ठी के मूल-मंत्र

भारत-नेपाल सम्बन्धों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में दोनों देशों के प्रतिभागियों, वक्ताओं, विशेषज्ञों ने चिन्तन-मनन, वाद-विवाद, विचार-विमर्श के साथ निम्न निष्कर्ष प्रस्तुत किए-

१. भारत-नेपाल के प्राकृतिक सम्बन्धों यथा भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता दोनों देशों के माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाय।
२. भारत-नेपाल की पूरकता का दोनों देशों की जनता में विविध-माध्यमों से निरन्तर प्रचार-प्रसार होते रहना चाहिए।
३. दोनों देशों में सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक संस्थाएं भारत-नेपाल मैत्री संस्थान बनाकर अपने-अपने दृष्टि से कार्य करें और उन्हें सरकार प्रोत्साहित करें।
४. भगवान बुद्ध, गुरू श्री गोरक्षनाथ, भगवान पशुपति के माध्यम से दोनों देशों की जनता को आध्यात्मिक स्तर पर जोड़े रखने के प्रयास हों।
५. भारत-नेपाल को यह भरोसा दिलाए कि उसकी सम्प्रभुता अक्षुण्ण रहेगी, यह भारत की जिम्मेवारी हो।
६. नेपाल के आर्थिक-सामाजिक-शैक्षिक विकास में भारत अपने राज्यों के समान वहाँ की जनता एवं जनप्रतिनिधियों को विश्वास में लेकर पूर्ण सहयोग करें।

हिन्दुस्तान
गोरखपुर • शनिवार • 14 फरवरी 2015

नेपाल के पूर्व गृहमंत्री आएंगे एमपीपीजी

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी का गोरखपुर आने का कार्यक्रम रद हो गया है। वह वहां महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ में 14 फरवरी को '21 वीं शताब्दी में भारत नेपाल सम्बन्धः चुनौतियां एवं विकल्प' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि आने वाली थीं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कैबिनेट बैठक बुला लिए जाने के कारण उनका कार्यक्रम स्थगित हो गया है। अब नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड्क कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। नेपाल के पूर्व गृह राज्य मंत्री डा. देवेन्द्र कंडेल भी मौजूद रहेंगे।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. प्रदीप राव ने बताया कि 14 फरवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से महाविद्यालय के श्रीराम सभागार में संगोष्ठी होगी। संगोष्ठी में भारत नेपाल की सांस्कृतिक एकता, भारत-नेपाल रिश्ते पर वैश्विक रणनीति, कूटनीति और षड्यंत्रों के बारे में विस्तार से चर्चा होगी।

राष्ट्रीय सहारा
गोरखपुर । शनिवार • 14 फरवरी • 2015

- दिव्य प्रेम सेवा मिशन के तत्वावधान में संत विजय कौशल जी की श्रीरामकथा अपराह्न 2 बजे से चम्पा देवी पार्क के सामने।
- कालिंदी पब्लिक स्कूल, खोराबार में मातृ-पितृ पूजन दिवस का आयोजन प्रातः 10 बजे।
- महाराणा प्रताप पीजी कालेज, जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्‌घाटन पूर्वाह्न 11 बजे।
- नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी के तत्वावधान में वाद-प्रतिवाद, निबंध प्रतियोगिता तथा चित्रकला महोत्सव का पुरस्कार वितरण समारोह अपराह्न 12.30 बजे एमजी इंटर कालेज में।
- उत्तर प्रदेश जूनियर बालक फुटबाल चैम्पियनशिप अंडर-19 का शुभारंभ अपराह्न 3 बजे रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम में।

अमर उजाला
गोरखपुर | शनिवार | 14 फरवरी 2015

भारत-नेपाल संबंधों पर चर्चा को जुटेंगे विद्वान

गोरखपुर। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के श्रीराम सभागार में शनिवार सुबह 11 बजे 'भारत-नेपाल संबंध : चुनौतियां एवं विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्‌घाटन होगा। संगोष्ठी का उद्‌घाटन नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खेम बहादुर खड्का करेंगे। समारोह की अध्यक्षता सांसद व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त आदित्यनाथ करेंगे। इसमें अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. सतीश चंद्र मित्तल, प्रो. शिवाजी सिंह, प्रो. टीपी वर्मा, प्रो. यूपी सिंह, प्रो. एपी शुक्ला शिरकत करेंगे। यह जानकारी डॉ. प्रदीप राव ने दी।

राष्ट्रीय सहारा
गोरखपुर । रविवार • 15 फरवरी • 2015

जनक्रांति के चौखट पर खड़ा है नेपाल : योगी

गोरखपुर (एसएनबी)। जनक्रांति के चौखट पर पड़ोसी देश नेपाल खड़ा है। नेपाल की जनता नेपाल में व्याप्त अराजकता के खिलाफ एकजुट और मुखर हो रही है। नेपाल भारत का अभिन्न देश है तथा भारत को नेपाल की जनता की भावनाओं के साथ सहानुभूति, समर्थन और सहयोग व्यक्त करना चाहिए।

उक्त बातें महंथ सांसद योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन के अवसर पर अध्यक्षता करते हुए कही। 21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल संबंध : चुनौतियां और विकल्प विषय पर उन्होंने कहा कि नेपाल और भारत की स्थिति दो देह एक प्राणी जैसी है। भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य हैं किंतु इन दोनों देशों की आत्मा एक है। योगी ने कहा कि भारत और नेपाल के बीच राजनैतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते खून के रिश्ते हैं। नेपाल का हिंदू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड्का ने कहा कि भारत-नेपाल के बीच एकता की महत्वपूर्ण कड़ी हैं गुरू गोरखनाथ। मंदिर महंत दिग्विजयनाथ के समय से ही नेपाल का आध्यात्मिक केंद्र रहा है और गोरखनाथ नेपाल की जनता के प्रमुख आराध्य देव हैं। श्री खड्का ने कहा कि गोरखनाथ मंदिर और भारत से हमारी विशेष अपेक्षाएं हैं कि नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़े तथा सहयोग करे। नेपाल अपने बलबूते आतंकवाद, घुसपैठ और अंतराष्ट्रीय समस्याओं से नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि विदेशी षड्यंत्रों के चलते भारत-नेपाल के रिश्तों में खटास बढ़ी है लेकिन दोनों देश एक-दूसरे के पूरक राष्ट्र हैं। मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चंद्र मित्तल ने कहा कि नेपाल और भारत भू- सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हैं और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक हैं। भारत-नेपाल की भौतिक-राजनीतिक विकास एक-दूसरे पर सदैव आश्रित रही है। विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेन्द्र राज कंडेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका निर्वाह करे। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयोगी बना रहेगा। प्रो. यूपी सिंह, प्रो. एपी शुक्ला, प्रो. टीपी वर्मा, लाल मुकुन्द पाण्डेय, डा. केएन पाण्डेय, डा. वेदप्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवाजी सिंह, डा. कुंवर बहादुर कौशिक, डा. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डा. कल्याण सिंह, प्रो. हरिशरण, डा. प्रदीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डा. शेर बहादुर सिंह एवं डा. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विचार प्रस्तुत किए। उद्‌घाटन समारोह की प्रस्तावना प्राचार्य डा. प्रदीप राव ने रखी तथा अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापन समिति के अध्यक्ष डा. [illegible] सिन्हा ने और संचालन डा. ओमजी उपाध्याय ने किया। मीनाक्षी शर्मा, नीलम शर्मा, [illegible], रमन प्रीत कौर, सुरभि सिंह, अपराजा वर्मा, किन्नू ओझा एवं शशि गुप्ता ने सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत तथा वंदे मातरम प्रस्तुत किया।

विषय पर आयोजित की गयी दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

गोरखपुर | 15 फरवरी 2015

अमर उजाला | गोरखपुर

'भारत से नेपाल का आध्यात्मिक रिश्ता है'

एमपीपीजी कॉलेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में नेपाल के पूर्व गृहमंत्री ने रखे विचार

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता व पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि गुरु गोरक्षनाथ नेपाल और भारत के बीच एकता की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। भारत से नेपाल का आध्यात्मिक रिश्ता भी है। आज नेपाल अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। आतंकवाद, घुसपैठ और नेपाल में आंतरिक गतिरोध भारत के सहयोग के बिना खत्म नहीं हो सकता है।

पूर्व गृहमंत्री ने ये बातें महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में आयोजित '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल संबंध : चुनौतियां और विकल्प' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन पर बतौर मुख्य अतिथि कही। कहा कि, विदेशी षड्यंत्रों के कारण पिछले कुछ वर्षों में भारत और नेपाल के रिश्तों में खटास बढ़ी है। जबकि दोनों ही देश एक दूसरे के पूरक हैं। हमारी अपेक्षा है कि भारत आगे बढ़कर नेपाल का सहयोग करे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारत नेपाल संबंधों पर चर्चा की गई।

मुख्य वक्ता इतिहासकार प्रो. सतीश चंद्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर विस्तार से चर्चा की। विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका का निर्वाह करे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सदर सांसद महंत आदित्यनाथ ने कहा कि भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। दोनों देशों के बीच राजनीतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते हैं। नेपाल का हिंदू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है। उद्घाटन समारोह की प्रस्तावित्की प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हर्ष सिन्हा, संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया। पूर्व वीसी प्रो. यूपी सिंह, प्रो. एपी शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी में आज

- सुबह 9.30 बजे समानांतर तकनीकी सत्र।
- सुबह 10.30 बजे प्रो. टीपी वर्मा का विशेष व्याख्यान।
- दोपहर 1.30 बजे समापन समारोह। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बाल मुकुंद पांडेय होंगे तथा अध्यक्षता प्रो. राजेंद्र प्रसाद करेंगे।

तकनीकी सत्र में पढ़े गए शोध पत्र

प्रो. टीपी वर्मा, बाल मुकुंद पांडेय, डॉ. केएन पांडेय, डॉ. वेद प्रकाश पांडेय, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कुंवर बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ. दीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ. शेर बहादुर सिंह, डॉ. शैलेंद्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने शोध पत्र पढ़कर संगोष्ठी का विषय प्रस्तुत किया।

हिन्दुस्तान • गोरखपुर • रविवार • 15 फरवरी 2015

नेपाल को उबरने में सहयोग दे भारत: खड़का

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने अपना संविधान बनाने के लिए जूझते नेपाल को माओवाद, आतंकवाद, घुसपैठ और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं से उबारने में भारत से मदद करने की अपील की। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ में '21 वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध: चुनौतियां और विकल्प' विषय पर उन्होंने कहा कि नेपाल अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। संकट की इस घड़ी में गोरक्षपीठ से भी नेपाल को ढेरों अपेक्षाएं हैं।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे सांसद और गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने कहा कि नेपाल की वास्तविक पहचान हिन्दू राष्ट्र के रूप में ही है। नए संविधान में उसका यह स्वरूप बरकरार रहना चाहिए। भारत को इसके लिए हर प्रकार का सहयोग करना चाहिए।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुस्तक का विमोचन करते सांसद आदित्यनाथ व नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का तथा अन्य अतिथि

मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के अध्यक्ष प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक है।

नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेन्द्र राज कण्डेल ने बतौर विशिष्ट अतिथि कहा कि नेपाल के अधिकतर नागरिक खुद को भारत का ही मानते हैं। इस मौके पर प्रो.यूपी.सिंह, प्रो.एपी शुक्ला, प्रो.टीपी. वर्मा, श्री बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ.केएन. पाण्डेय आदि ने विचार व्यक्त किए। उद्घाटन सत्र की प्रस्तावित्की प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। संचालन डॉ.ओमजी उपाध्याय ने किया।

स्वतंत्र चेतना
www.swatantrachetna.in
गोरखपुर, रविवार, 15 फरवरी 2015

भारत और नेपाल की आत्मा एक : योगी

- एमपी पीजी कालेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
- नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने किया उद्घाटन

पुस्तक का विमोचन करते सांसद योगी आदित्यनाथ, खुम बहादुर, देवेन्द्र राज व अन्य।

गोरखपुर। नेपाल और भारत की स्थिति दो देह एक प्राणी जैसी है। भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य है किन्तु इन दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक है। भारत की परम्परा एक है, संस्कृति एक है, पूर्वज एक है, देवता एक है। नेपाल की रक्षा हिमालय की रक्षा है और हिमालय की रक्षा भारत की रक्षा का पर्याय है अतः भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। अतः भारत और नेपाल के बीच राजनीतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते खून के रिश्ते हैं। नेपाल का हिन्दू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पीजी कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ और विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ ने कही। भारत को नेपाल की जनता की भावनाओं के साथ सहानुभूति, समर्थन और सहयोग व्यक्त करना चाहिए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि नेपाल और भारत के बीच एकता की महत्वपूर्ण कड़ी हैं गुरु गोरक्षनाथ। गोरखनाथ मन्दिर और भारत से हमारी विशेष अपेक्षाएँ हैं कि नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़े-सहयोग करें। उन्होंने आगे कहा कि आतंकवाद, घुसपैठ और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से नेपाल अपने बलबूते नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। विदेशी षड्यन्त्रों के कारण भारत-नेपाल रिश्तों में खटास बढ़ी है। किन्तु भारत-नेपाल एक दूसरे के पूरक राष्ट्र हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हैं और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक है।

विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेन्द्र राज कण्डेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका का निर्वाह करे। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयात्री बना रहेगा। नेपाल के मूल चरित्र की रक्षा के लिए नेपाल भारत का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो.यू.पी.सिंह, प्रो.ए.पी.शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर नेपाल से आए एक दर्जन प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने और द्विपक्षीय वार्ता से राष्ट्रीय संगोष्ठी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर ली। इस संगोष्ठी में प्रो.टीपी.वर्मा, बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ.केएन.पाण्डेय, डॉ.वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो.शिवाजी सिंह, डॉ.कुंवर बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ. प्रदीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ. शेर बहादुर सिंह, डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विषय प्रस्तुत किए।

उद्घाटन समारोह की प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ.प्रदीप राव ने रखी। अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हर्ष सिन्हा ने व्यक्त किया। संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया। सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत तथा वन्दे मातरम् मीनाक्षी शर्मा, नलिनी शर्मा, प्रीति, रमन प्रीत कौर, सुरभि सिंह, आराधना वर्मा, बिन्नू ओझा और शशि गुप्ता ने प्रस्तुत किया।

दैनिक जागरण गोरखपुर, 15 फरवरी 2015

विदेशी षड्यंत्र का परिणाम है भारत-नेपाल रिश्तों में खटास

पुस्तक का विमोचन करते नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का, गोरक्षपीठाधीश्वर सांसद योगी आदित्यनाथ व अन्य। जागरण।

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : आतंकवाद, घुसपैठ और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं से नेपाल अपने बलबूते नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। विदेशी षड्यंत्रों के कारण भारत-नेपाल रिश्तों में खटास बढ़ी है। किन्तु भारत-नेपाल एक दूसरे के पूरक राष्ट्र है।

यह बातें महाराणा प्रताप पीजी कालेज, जंगल धूसड़, में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध: चुनौतियां और विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कही।

खड़का ने कहा कि नेपाल-भारत के बीच एकता की महत्वपूर्ण कड़ी है गुरु गोरक्षनाथ। गोरक्षनाथ नेपाल की जनता के प्रमुख आराध्यदेव है। नेपाल अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। गोरक्षनाथ मंदिर और भारत से हमारी विशेष अपेक्षाएं है कि नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़े और सहयोग करें। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर एक विहगम दृष्टि डालते हुए कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से एक है और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक है। भारत-नेपाल की भौतिक-राजनीतिक विकास एक दूसरे पर सदैव आश्रित रहा है।

- एमपीपीजी कालेज में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बंध: चुनौतियां और विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो देह-एक प्राण है भारत-नेपाल : दो दिवसीय संगोष्ठी में गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने भारत-नेपाल को दो देह एक प्राणी बताया। उन्होंने कहा कि भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य है किन्तु इन दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक है। भारत की परम्परा एक है, संस्कृति एक है, पूर्वज एक है, देवता एक है। नेपाल की रक्षा हिमालय की रक्षा है और हिमालय की रक्षा भारत की रक्षा का पर्याय है। अतः भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। बतौर विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेन्द्र राज कंडेल ने कहा कि भारत अग्रज की भूमिका का निर्वाह करें। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयात्री बना रहेगा। नेपाल के मूल चरित्र की रक्षा के लिए नेपाल भारत का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है। इस अवसर पर प्रो. पृथ्वी सिंह व प्रो. एपी शुक्ला ने भी विचार व्यक्त किए। नेपाल से आए एक दर्जन प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने और द्विपक्षीय वार्ता से राष्ट्रीय संगोष्ठी अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर ली। इससे पहले मेजबान प्राचार्य डा. प्रदीप राव ने विषय प्रवेश कराया। जबकि अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. हर्ष सिन्हा ने व्यक्त किया।

गोरखपुर, रविवार, 15 फरवरी , 2015 सिटी टाइम्स

भारत का नेपाल के साथ खून का रिश्ता

कार्यालय संवाददाता, गोरखपुर।

नेपाल और भारत की स्थिति दो देह एक प्राणी जैसी है। भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य हैं, किन्तु इन दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक है। भारत की परम्परा एक है, संस्कृति एक है, पूर्वज एक है, देवता एक हैं। नेपाल की रक्षा हिमालय की रक्षा है और हिमालय की रक्षा भारत की रक्षा का पर्याय है। अतः भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। अतः भारत और नेपाल के बीच राजनीतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते खून के रिश्ते हैं। नेपाल का हिन्दू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का।

डुक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ और विकल्प विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए गोरक्षापीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने कही। महंत योगी आदित्यनाथ महाराज ने आगे कहा कि नेपाल जनक्रान्ति के चौखट पर खड़ा है। नेपाल की जनता नेपाल में व्याप्त अराजकता के खिलाफ एकजुट और मुखर हो रही है। नेपाल भारत का अभिन्न देश है भारत को नेपाल की जनता की भावनाओं के साथ सहानुभूति, समर्थन और सहयोग व्यक्त करना चाहिए। राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि नेपाल और भारत के बीच एकता भी महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर महत दिग्विजयनाथ जी के समय से ही नेपाल का आध्यात्मिक केन्द्र रहा है। गोरखनाथ नेपाल की जनता के प्रमुख अराध्य देव हैं। नेपाल अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। गोरखनाथ मन्दिर और भारत से हमारी विशेष अपेक्षाएँ हैं कि नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़े-सहयोग करें।

उन्होंने आगे कहा कि आतंकवाद, घुसपैठ और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से नेपाल अपने बलबूते नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। विदेशी षड़यन्त्रों के कारण भारत-नेपाल रिश्तों में खटास बढ़ी है। किन्तु भारत-नेपाल एक दूसरे के पूरक राष्ट्र हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हैं और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक हैं। भारत-नेपाल की भौतिक-राजनीतिक विकास एक दूसरे पर सदैव आश्रित रही है। विशिष्ट अतिथि

नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़कर सहयोग करेः पूर्व गृहमंत्री नेपाल

भारत का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है नेपाल : पूर्व गृह राज्यमंत्री नेपाल देवेन्द्र राज कण्डेल

नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री देवेन्द्र राज कण्डेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका का निर्वाह करें। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयात्री बना रहेगा। नेपाल के मूल चरित्र की रक्षा के लिए नेपाल भारत का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो. यू.पी. सिंह, प्रो. ए.पी. शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर नेपाल से आए एक दर्जन प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने और द्विपक्षीय वार्ता से राष्ट्रीय संगोष्ठी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर ली। इस संगोष्ठी में प्रो. टी.पी. वर्मा, श्री बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ. के.एन. पाण्डेय, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ. प्रदीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ. वीर बहादुर सिंह, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विषय प्रस्तुत किए।उद्घाटन समारोह की प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हर्ष सिन्हा ने व्यक्त किया। संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया। सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत तथा वन्दे मातरम् मीनाक्षी शर्मा, नलिनी शर्मा, प्रीति, रमन प्रीत कौर, सुरभि सिंह, आराधना वर्मा, बिन्नू ओझा और शशि गुप्ता ने प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में कल 9.30 बजे से समानान्तर तकनीकी सत्र 10.30 प्रो. टी.पी. वर्मा का विशेष व्याख्यान होगा।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बाल मुकुन्द पाण्डेय जी होंगे। अध्यक्षता पूर्व कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद करेंगे। विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेश कुमार सिंह होंगे।

आज गोरखपुर
गोरखपुर, रविवार, १५ फरवरी २०१५

भारत और नेपाल की आत्मा एक - आदित्यनाथ

❑एमपी पीजी कॉलेज में भारत-नेपाल संबंध पर संगोष्ठी शुरू❑नेपाल की रक्षा में सहयोग करे भारत-खुम बहादुर

गोरखपुर, १४ फरवरी। नेपाल और भारत की स्थिति दो देह एक प्राणी जैसी है। भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य है किन्तु इन दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक है। भारत की परम्परा एक है, संस्कृति एक है, पूर्वज एक है, देवता एक हैं। नेपाल की रक्षा हिमालय की रक्षा है और हिमालय की रक्षा भारत की रक्षा का पर्याय है अतः भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। नेपाल का हिन्दू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पीजी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ और विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए आज गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ ने कही। कहा कि नेपाल जनक्रान्ति के चौखट पर खड़ा है। नेपाल की जनता नेपाल में व्याप्त अराजकता के खिलाफ एकजुट और मुखर हो रही है। मुख्य अतिथि नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता एवं पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि नेपाल और भारत के बीच एकता भी महत्वपूर्ण कड़ी हैं गुरु गोरक्षनाथ। गोरक्षनाथ मन्दिर महन्त दिग्विजयनाथ के समय से ही नेपाल का आध्यात्मिक केन्द्र रहा है। गोरखनाथ नेपाल की जनता के प्रमुख आराध्य देव हैं। नेपाल अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है उन्होंने कहा कि आतंकवाद, घुसपैठ और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से नेपाल अपने बलबूते नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हैं। विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री देवेन्द्र राज कण्डल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका का निर्वाह करें। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयात्री बना रहेगा। राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो. यूपी. सिंह, प्रो. एपी. शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी में प्रो. टोपी. वर्मा, श्री बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ. केएन. पाण्डेय, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ. प्रदीप यादव, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ. शेर बहादुर सिंह, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विषय प्रस्तुत किए। उद्घाटन समारोह की प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में कल 9:30 बजे से समानान्तर तकनीकी सत्र 10:30 प्रो. टोपी. वर्मा का विशेष व्याख्यान होगा। कल समापन समारोह में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बाल मुकुन्द पाण्डेय जी होंगे। अध्यक्षता पूर्व कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद करेंगे। विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेश कुमार सिंह होंगे।

संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य अतिथि।

15.2.2015 अमर उजाला कॉम्पैक्ट

नेपाल के हालात सुधारने के लिए भारत का सहयोग जरूरी : खुम बहादुर

एमपी पीजी कॉलेज में कार्यक्रम में आए थे नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर

गोरखपुर। नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता व पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि गुरु गोरखनाथ नेपाल और भारत के बीच एकता की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। भारत से नेपाल का आध्यात्मिक रिश्ता भी है। आतंकवाद, घुसपैठ और नेपाल में आंतरिक गतिरोध भारत के सहयोग के बिना खत्म नहीं हो सकता है।

पूर्व गृहमंत्री ने ये बातें महाराणा प्रताप पीजी कालेज, जंगल धूसड़ में आयोजित '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल संबंध : चुनौतियां और विकल्प' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन पर बतौर मुख्य अतिथि कहीं। मुख्य वक्ता इतिहासकार प्रो. सतीश चंद्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि नेपाल और भारत सांस्कृतिक दृष्टि और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक हैं। विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं।

अध्यक्षता करते हुए सदर सांसद महंत आदित्यनाथ ने कहा कि भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी हैं। दोनों देशों के बीच राजनीतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते हैं। समारोह की प्रस्तावना प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हर्ष सिन्हा तथा संचालन डॉ. श्रीमती उपाध्याय ने किया। पूर्व कुलपति प्रो. यूपी सिंह, प्रो. एमी शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते मुख्य अतिथि पूर्व गृह मंत्री नेपाल खुम बहादुर खड़का।

राष्ट्रीय सहारा
गोरखपुर। रविवार • 15 फरवरी • 2015

- संत विजय कौशल की श्रीरामकथा 1 बजे से चम्पा देवी पार्क के सामने।
- सेंट एंड्रयूज चर्च, धर्मपुर में सेंट एंड्रयूज का पर्व अपराह्न 3.30 बजे से।
- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मोहद्दीपुर स्थित केंद्र पर किसान सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम अपराह्न 1 बजे से।
- श्री [illegible] सेवा समिति के तत्वावधान में पशु-शिशु पूजन अपराह्न 1 बजे [illegible] रेलवे [illegible] पार्क में।
- [illegible] एकेडमी, कृष्णा नगर में [illegible] सम्मेलन व विज्ञान प्रदर्शनी प्रातः 10 बजे से।
- [illegible] के तत्वावधान में [illegible] प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण अपराह्न 1 बजे से [illegible] सभागार में।
- महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन अपराह्न 1.30 बजे से।
- [illegible] गोरखपुर की [illegible] पूर्वाह्न 11 बजे [illegible] में।
- [illegible] के तत्वावधान में [illegible] पूर्वाह्न 11 बजे [illegible] में।

चेतना विकास मिशन

गोरखपुर, 15 फरवरी, 2015

भारत और नेपाल की आत्मा एक : योगी

- एमपी पीजी कालेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
- नेपाल के पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने किया उद्घाटन

पुस्तक का विमोचन करते सांसद योगी आदित्यनाथ, खुम बहादुर, देवेन्द्र राज व अन्य।

गोरखपुर। नेपाल और भारत की स्थिति दो देह एक प्राणी जैसी है। भारत-नेपाल दो राजनीतिक इकाई अवश्य है किन्तु इन दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक है। भारत की परम्परा एक है, संस्कृति एक है, पूर्वज एक है, देवता एक हैं। नेपाल की सुरक्षा हिमालय की रक्षा है और हिमालय की रक्षा भारत की रक्षा का पर्याय है अतः भारत-नेपाल के रिश्ते मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक भी है। अतः भारत और नेपाल के बीच राजनीतिक एवं आध्यात्मिक रिश्ते खून के रिश्ते हैं। नेपाल का हिन्दू राष्ट्र का चरित्र ही उसकी वास्तविक पहचान है। उक्त बातें महाराणा प्रताप पीजी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में '21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ और विकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ ने कही। भारत को नेपाल की जनता की भावनाओं के साथ सहानुभूति, समर्थन और सहयोग व्यक्त करना चाहिए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि नेपाल कांग्रेस के प्रमुख नेता पूर्व गृहमंत्री खुम बहादुर खड़का ने कहा कि नेपाल और भारत के बीच एकता भी महत्वपूर्ण कड़ी हैं गुरु गोरक्षनाथ। गोरखनाथ मन्दिर और भारत से हमारी विशेष अपेक्षाएँ हैं कि नेपाल और हिमालय की रक्षा के लिए भारत आगे बढ़े-सहयोग करें। उन्होंने आगे कहा कि आतंकवाद, घुसपैठ और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से नेपाल अपने बलबूते नहीं निपट सकता, भारत का सहयोग ही नेपाल की रक्षा कर सकता है। विदेशी षड़यन्त्रों के कारण भारत-नेपाल रिश्तों में खटास बढ़ी है। किन्तु भारत-नेपाल एक दूसरे के पूरक राष्ट्र हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित इतिहासकार प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल ने भारत-नेपाल के बीच ऐतिहासिक विकास-यात्रा पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए कहा कि नेपाल और भारत भू-सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हैं और राजनीतिक एवं इतिहास विकास की दृष्टि से भी एक हैं।

विशिष्ट अतिथि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेन्द्र राज कण्डेल ने कहा कि नेपाल के अधिकांश नागरिक अपने को भारत का ही मानते हैं। भारत अपनी अग्रज की भूमिका का निर्वाह करें। नेपाल सदैव अनुज की तरह भारत का सहयात्री बना रहेगा। नेपाल के मूल चरित्र की रक्षा के लिए नेपाल भारत का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो.यू.पी.सिंह, प्रो.ए.पी.शुक्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर नेपाल से आए एक दर्जन प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने और द्विपक्षीय वार्ता से राष्ट्रीय संगोष्ठी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर ली। इस संगोष्ठी में प्रो.टीपी.वर्मा, बाल मुकुन्द पाण्डेय, डॉ.केएन.पाण्डेय, डॉ.वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो.शिवाजी सिंह, डॉ. कुवँर. बहादुर कौशिक, डॉ. सुशील त्रिपाठी, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. बलवान सिंह, प्रो. हरिशरण, डॉ.प्रदीप यादव, प्रो ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ. शेर बहादुर सिंह, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तकनीकी सत्र में अपने विषय प्रस्तुत किए।

उद्घाटन समारोह की प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने रखी। अतिथियों के प्रति आभार आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हर्ष सिन्हा ने व्यक्त किया। संचालन डॉ. ओमजी उपाध्याय ने किया। सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत तथा वन्दे मातरम् मीनाक्षी शर्मा, नलिनी शर्मा, प्रीति, रमन प्रीत कौर, सुरभि सिंह, आराधना वर्मा, बिन्नू ओझा और शशि गुप्ता ने प्रस्तुत किया।